J.B. TEACHER'S TRAINING INSTITUTE
EDUCATION IS SUCCESS
SADUL SHAHAR

Modern Trends in 21st Century Education

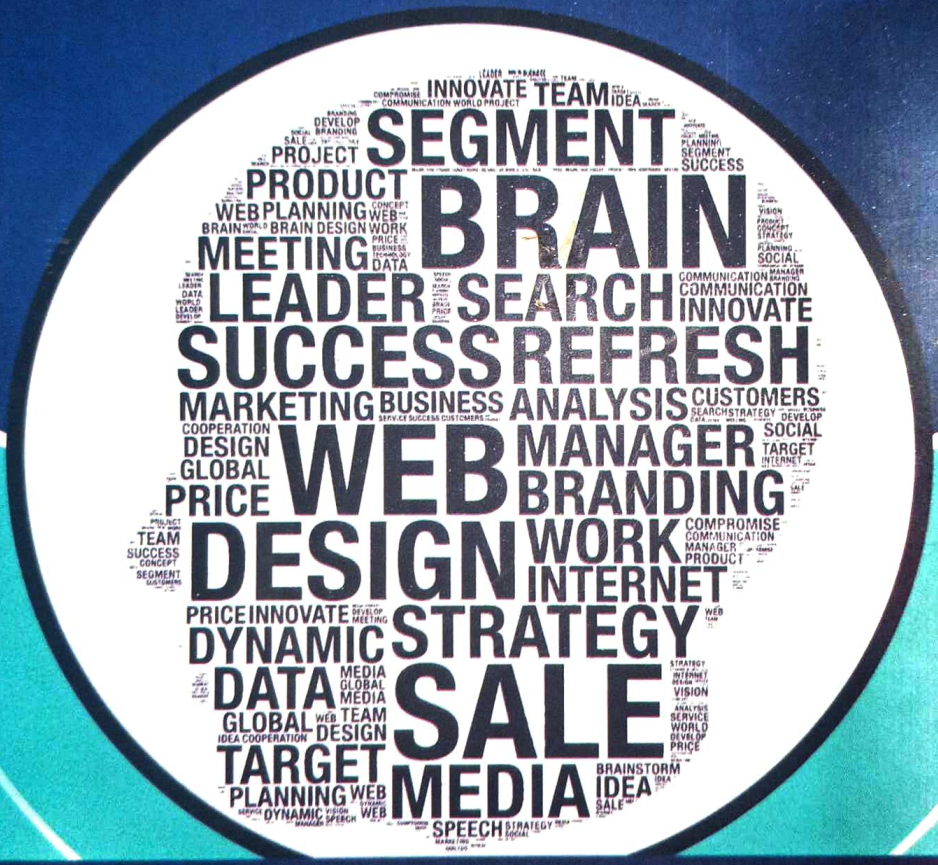

Chief Editor: **Dr. Usha Godara**

Editors: **Dr. Girdhar Sharma • Dr. Rajpal Verma**

J.B. Teacher's Training Institute 23ptp,

Sadul Shahar

12

भाषा का सीखने सिखाने से संबंध

*मार्ग्रेट कुजूर**

भाषा क्यों जरूरी है

प्राथमिक शिक्षा का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पहलू है बच्चे का भाषा सीख पाना। भाषा ही बच्चे के लिए स्रोत का काम करती है और वह अभिव्यक्ति का भी औजार है इसी से होकर शिक्षा के अन्य पहलुओं तक बालक की पहुँच हो पाती है। जैसे यह समझा जा सकता है कि भाषा एक साधन है जो इन सब उद्देश्यों के लिए आवश्यक है ऐसा साधन जो हथौड़े की तरह या फिर दीवार चढ़ने के लिए उसके साथ खड़ी एक सीढ़ी की तरह होता है। जिस प्रकार उद्देश्य छत पर चढ़ना है व सीढ़ी साधन उसी प्रकार भाषा भी एक साधन है , संप्रेषण का, विचार कर पाने का, विज्ञान, गणित आदि सीखने, निर्णय ले पाना, आदि का एक साधन है जो हमसे इतर है, और सब के लिए एक सा ही है। भाषा साधन होने के साथ–साथ बहुत कुछ और भी है हम हमारे व्यक्तित्व व हमारे अहम का आधार है , हमारी संस्कृति व समझ का भंडार भी है।

इंसान अपने आस–पास की दुनिया को केवल महसूस ही नही करता वह उसे अपने लिए अर्थ भी देता है। मुझे आसमान में बादल दिखाई देता है इसे देखने से जो मैं महसूस करता हूँ, मेरे मस्तिष्क पर जो प्रभाव पड़ता है , मेरे काम पर जो प्रभाव पड़ता है , वह आसमान में अलग–अलग आकार व रंगवाली आकृति मात्र देखने का प्रभाव नहीं है वह मेरे और बादल के बीच और उस समय की मेरी स्थिति के बीच अंतः क्रिया का प्रभाव है।

ये अवधारणाएँ हमारे दिमाग में कैसे रहती है? और विकसित होती है समझना एक वृहद विषय है किन्तु हम यह जरूर कह सकते है कि इन अवधारणाओ पर चर्चा कर पाने के लिए हम व बच्चे इंगित करने के लिए अपने मानस में बहुत सारे प्रतीक बनाते हैं और उन प्रतीकों व अवधारणाओं के बीच आपसी संबंधो की धारणाएँ बनाते हैं। इतने सारे प्रतीकों के बिना हम यह विचार–चर्चा व अपनी कल्पना का संचालन कर ही नहीं सकते। भाषा इसी प्रतीक के बनाने, इन्हें बदलने व अदान–प्रदान की नींव पर खड़ी होती है और वैसे यह स्पष्ट ही है कि इन सब प्रतीकों का आदान–प्रदान भाषा के बिना हो ही नहीं सकता।

मौखिक भाषा की छोटी से छोटी सार्थक इकाई शब्द है। शब्द ध्वनियों का ऐसा समूह है जिसमें ध्वनियाँ एक निश्चित क्रम से उच्चारित की जाती हैं। यदि इस प्रकार के ध्वनि समूहों को किसी निश्चित अवधारणा से न जोड़ा जाए तो वे सार्थक शब्द नहीं बनेगे। शब्द ऐसा क्रमिक ध्वनि समूह है जो किसी अवधारणा को इंगित करता है। इस ध्वनि समूह तथा इसके द्वारा इंगित अवधारणा में संबंध किसी तर्क पर आधारित नहीं है। यह ठीक है कि सभी हिन्दी भाषी 'पेड़' उच्चारण को सुनकर एक ही अर्थ समझते हैं, अर्थात् उच्चारण और अर्थ

* सहायक प्राध्यापक हिन्दी, एम.ए. हिन्दी नेट, सेट, बी.एड., शासकीय महाविद्यालय धरमजयगढ, जिला रायगढ (छ.ग.)

का संबंध सुस्थिर है तथा एक भाषियों के समूह में सार्वभौम है भी है, पर अंततः यह मनमानाही है। पेड़ के अर्थ को इंगित करने के लिए बंगााली बोलने वाले 'माछ' कहेंगें और अंग्रेज़ीबोलने वाले ट्री कहेंगे। दूसरी बात, अर्थ के निर्माण के लिए शब्दों का प्रयोग निश्चित नियमों के अनुसार किया जाता है अर्थात शब्दों के उच्चारण का क्रम निर्धारण नियमानुसार होता है। भाषा वह ध्वनि समूहों से अवधारणाओं के अनुबंध तथा इस प्रकार से बने शब्दों को व्यवहार में लाता है समूह के अंदर नियम मानने होते हैं और सभी को उन्ही मान्य नियमों के अंतर्गत चलना होता है। कोई यह नही कह सकता कि मै तो अलग ही नियम चलाऊँगा या जब मन आए वैसा बोलूँगा अथवा लिखूँगा। मान पाना इस बात में है कि यह पहले से तय नही है। वह नियमों का तंत्र है जो यह तंत्र सुव्यवस्थित तथा पूर्णतया मानवकृत है भाषा सिखने का अर्थ है इस तंत्र पर अधिकार तथा इसका अर्थ निर्माण, अर्थ ग्रहण करने व अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दक्ष प्रयोग कर पाना अर्थात् मौखिक–भाषा में हम सुनी गई ध्वनियों पर कुछ नियम लगाकर अर्थ ग्रहण करते है। इस प्रकार अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए निश्चित नियमानुसार ध्वनि उच्चारित करते हैं।

सुनकर समझना–

ध्वनियाँ अर्थ

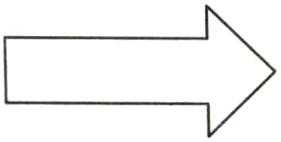

अभिव्यक्ति–

अर्थ ध्वनियाँ

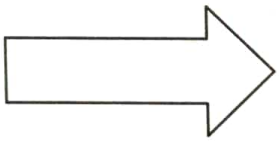

जिस तरह मौखिक भाषा में श्रव्य प्रतीकों का प्रयोग होता है उसी तरह लिखित भाषा में दृश्य प्रतीकों का प्रयोग होता है अक्षर वास्तव में ध्वनि के लिए प्रतीक का कार्य करते हैं (चीनी व कुछ अन्य भाषओं में लिपि संरचना अलग है और उसमें ध्वनि व लिखने के चिन्हों में संबंध नही है।)

बोलने में हमारे पास एक तो आवाज में उतार–चढ़ाव के प्रयोग की स्वतंत्रता होती है दूसरी, भाव–भंगिमाओं से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है तथा तीसरे ,क्योंकि संवाद आमने–सामने होता है अतः अस्पष्टता या भ्रामकता के स्पष्टीकरण के अवसर उपलब्ध होते हैं। ये तीनों सुविधाएँ लिखित भाषा के उपयोग में उपलब्ध नहीं होती। अतः एक तो लिखित भाषा में ध्वनि प्रतीकों के अलावा भी कुछ प्रतीक चिन्हो की आवश्यकता होती है जैसे पूर्ण विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक चिन्ह आदि। दूसरे लिखित भाषा में भाषा के नियमों की अनुपालना अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है ऐसा इसलिए क्योंकि संदर्भ से अन्य निकालने की संभावना नही होती।

यहाँ यह सब लिखने का उद्देश्य किसी प्रकार की भाषा शास्त्रीय विवेचना करना नहीं है बल्कि एक बहुत ही सीमित उद्देश्य है। यहाँ पर केवल उन्हीं मान्यताओं को सूचीबद्ध कर रहे है जो आरंभिक भाषा शिक्षण में सीधे उपयोग की गई है। भाषा के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है और उसका भाषा के विकास से संबंध भी हो सकता है। यहाँ हम मात्र वे चीजें लिख रहे है जो सीधे–सीधे उक्त सामग्री व विधि के मूल में है।

अभी तक के विवेचन से हम इन निष्कर्षों पर पहुँचे हैं–

1. बालक की समझ का विकास और उसकी भाषा का विकास एक दूसरे से गहरे रूप से संबंधित है।
2. मौखिक भाषा में क्रमिक ध्वनि समूहों का अवधारणाओं से मनमाना संबंध होता है।
3. ध्वनि समूहों तथा अवधारणाओं का यह संबंध सुस्थिर तथा भाषाभाषी समूह में सार्वभौम होता है। इन अवधारणा–अनुबंधित–क्रमिक ध्वनि समूहों के उपयोग के नियम भी मनमाने ,सार्वभौम तथा सुस्थिर होते हैं। इस प्रकार भाषा एक सुव्यवस्थित प्रतीक तंत्र है।
4. लिखित भाषा में अक्षर ध्वनियों के दृश्य प्रतीक होते हैं। आकृतियों व ध्वनियों का संबंध भी मनमाना, सुस्थिर तथा सार्वभौम होता है।
5. लिखित भाषा द्वारा अर्थ तक पहुँचने में मौखिक भाषा से अर्थ तक पहुँचने की तुलना में एक चरण अधिक आता है तंत्र–गत नियमों व अनबंधों का प्रयोग दो बार करना पड़ता है।
6. लिखित भाषा में संदर्भ, उतार–चढ़ाव, हाव–भाव और कोई संकेत नहीं होते। इसमें व्यक्त बात को समझने के लिए व्यवस्थित विचार क्रम की आवश्कता होती है, लिखित भाषा के साथ जूझने के लिए अमूर्त विचार–विमर्श की क्षमता भी चाहिए। पढ़ने की क्षमता बढ़ने से न सिर्फ स्रोतो तक पहुँच बढ़ती है।

भाषा का सीखने सीखाने से संबंध

इंसान अपने आस–पास की दुनिया को देखता है, छूता है, सूँघता है, चखता है और सुनता है देखना, सुनना इत्यादि को हम इंद्रिय–संप्रेषण कह सकते है। इंसान इन इंद्रिय–संप्रेषण को अपनी स्मृति में रख सकता है उस स्मृति को जागृत कर सकता है। विभिन्न समृतियों व इंद्रिय संप्रेषणों में संबंध देख सकता है। इन क्षमताओं व संप्रेषणों के आधार पर वह विचार बनाता है लाल पीला आदि रंगो के विचार। चारपाई पेड़ आदि वस्तुओं के विचार। इन विचारों को हम अवधारणाएँ कह सकते हैं। इन अवधारणाओं में आपसी संबंध होते है। जैसे भेड़, ऊन, कपड़ा, ठंड में संबंध। आम, गर्मी, मीठा, केरी, आचार में संबंध। इस प्रकार आपस में जुड़ी अवधारणाओं के समूह को हम अवधारणाओं की संरचना कह सकते हैं। इस तरह इंसान अवधारणाओं संरचना बना लेता है।

इंद्रिय –संप्रेषणों से होने वाली सीधी दैहिक अनुभूति को हम यहाँ अनुभव कहेंगे। अनुभव शब्द का दूसरा अधिक विस्तृत अर्थ भी है पर यहाँ इसी सीमित अर्थ में इस शब्द का उपयोग करेंगे। समझ की ऊपर दी गई परिभाषा से ही स्पष्ट है कि इसका आधार व्यक्ति के अनुभव ही हो सकते हैं क्योंकि मूल अवधारणाएँ सीधे अनुभवों से ही बन सकती हैं। जैसे बिना देखे लाल की अवधारणा बना पाना संभव ही नही है अर्थात् समझ का आधार अनुभव होते हुए समझ का उपयोग अनुभवों की व्याख्या और वांछित अनुभव प्राप्ति के लिए होता है।

ये भाषा शिक्षण के बारे में सामान्य दिशा–निर्देश हैं। अब विशेष रूप से पढ़ने–लिखने के बारे में विचार करने की जरूरत है। जैसा कि पहले कह चुके हैं मौखिक भाषा एक श्रव्य–प्रतीक तंत्र है इसी की तुलना में हम लिखित भाषा को दृश्य–प्रतीक तंत्र कह सकते हैं पर यह एक बड़ी भूल होगी। भाषा को दृश्य –प्रतीक तंत्र कहने का अर्थ होगा कि दृश्य–प्रतीकों से हम सीधे अर्थ तक पहुँच सकते हैं, पर यह बात सही नहीं है अक्षराकृतियों से नही बल्कि ध्वनि समूहों से है। वास्तव में हम पढ़ने से पहले अक्षराकृतियों की ध्वनियों के रूप में व्याख्या करते हैं। सबको देखते हुए हम पढ़ना–लिखना सिखाने के लिए एक और दिशा–निर्देश प्राप्त कर सकते हैं। पढ़ना–लिखना सीखने के लिए पर्याप्त सुव्यवस्थित अभ्यास होना चाहिए, पर उस अभ्यास को सार्थक व रूचिकर तरीके से करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण पृष्ठ संख्या 193–199